मौहर सिंह

जल संरक्षण क्यों और कैसे

करें महा उपकार, धरा पर नीर बचाकर।
इससे बड़ा न काम, सोच लो बुद्धि लगाकर।।[1]

जीवन की शुरूआत से, अंतिम दिन तक आप।
जल के बिना न कर सको, जीवन का कोई काम।।[2]

जल का विकल्प न मिल सका, बहुत किये प्रयास।
जल संरक्षण ही विकल्प, और न कोई आस।।[3]

बारहों मास यदि जल मिले, मन में है ये आस।
प्यासी धरती ना रहे, करना है प्रयास।।[4]

धरती माँ के गर्भ में, अपना नहीं जल स्रोत।
वर्षा जल से ही सिंचे, धरती माँ की कोख।। [5]

जेठ मास में हर बरस, यदि करें जलाशय साफ।
वर्षा आये आषाढ़ से, जल भर जाये अपने आप।। [6]

बारहों मास जल पाइये, जलाशयों से आप।
दुःख, जल का फिर ना रहे, और न हो संताप।।[7]

जब आये वर्षा ऋतु, बरसें अमृत बूँद।
ताल-तलैया हम भरें, रोक-रोक कर बूँद।।[8]

सरंक्षण करते समय, दूषित ना हो नीर।
रखना ध्यान विशेष यह, फिर ना होगी पीर।।[9]

धरती माँ की कोख में, दूषित जल को आप।
सीधे कभी न डालना, ये कभी न होगा साफ।।[10]

धरती कितना करेगी, दूषित जल को साफ।
उसकी भी सीमा बंधी, आगे वो लाचार।।[11]

दोहन जल का अति किया, खूब किया बर्बाद।
फिर भी आशा तुम करो, जीवन हो आबाद।।[12]

एक बूँद भी व्यर्थ में, अगर बह गई आज।
कल क्या होगा सोच लो, जब रूक जायें सब काज।।[13]

हर घर, चर्चा नित्य हो, जब सब परिजन घर होय।
क्यों जल संरक्षण हम करें, पता सभी को होय।।[14]

जल संरक्षण कर्म हो, मानव का हर रोज।
दिल से करना नित्य यह, नहीं समझना बोझ।।[15]

संरक्षण से जल बढ़े, जल से बढ़ती आब।
धरती के सब जीव यहां, जल से हैं आबाद।।[16]

श्वासें जिन्दा नीर से, संरक्षण से नीर।
जल संरक्षण कर लिया, फिर काहे की पीर।।[17]

बिन पानी धन, सम्पदा, सब कुछ है बेकार।
लाख, करोड़ों व्यर्थ सब, जल के बिन लाचार।।[18]

धन से ज्यादा मूल्य दो, समझों इसे अमूल्य।
यदि जल भू पर ना रहा, जीवन का क्या मूल्य।।[19]

मिटे संस्कृति, सभ्यता, कला और बागान।
जल संरक्षण से अगर, बने रहे अनजान।।[20]

जल के प्रति उदासीन, बने रहे यदि आप।
आँखों के सब सामने, हो जायेगा नाश।।[21]

आने वाली पीढ़ियाँ, कर न सकेंगी माफ।
अगर उन्हें ना दे सके, भरपूर, स्वच्छ जल आप।।[22]

संपर्क करें:
मौहर सिंह
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की